वर्तमान परिवेश में सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद ज़ाकिर हुसैन की वादन शैली का विवेचनात्मक अध्ययन
(स्वतन्त्र तबला वादन के विशेष सन्दर्भ में)

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा से संगीत विषय में
पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध की
रूपरेखा
2016

निर्देशिका:

डॉ0 नीलू शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर (तबला)

संगीत विभाग

शोधकर्त्री:

ज्योति

संगीत विभागाध्यक्षा

प्रा0 सुभद्रा कुमारी सतसंगी

कला संकाय प्रमुख

प्रो0 रागिनी रॉय

कला संकाय (संगीत विभाग)

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग, आगरा– 282005

वर्तमान परिवेश में सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद ज़ाकिर हुसैन की वादन शैली का विवेचनात्मक अध्ययन (स्वतन्त्र तबला वादन के विशेष सन्दर्भ में)

भारतीय संगीत में अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी में तबला वाद्य सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय ताल वाद्य है। तबला वाद्य का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, फिल्म संगीत इत्यादि संगीत की सभी विधाओं में बखूबी किया जा रहा है एवं संगत के साथ तबले में स्वतन्त्र वादन भी बहुप्रचारित है।

तबला वादन में ख्याति प्राप्त कई महान तबला वादकों एवं कलाकारों नें अपनी रचनात्मकता एवं सृजनशीलता के माध्यम से अनेक बन्दिशों की रचना कर तबला वाद्य के साहित्य को समृद्ध किया है, जिसके फलस्वरूप तबला वाद्य की ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैली हुई है। वर्तमान में तबला के छः घराने प्रचार–प्रसार में है जैसेः– दिल्ली घराना, अजराड़ा घराना, लखनऊ घराना, फर्रुखाबाद घराना, बनारस घराना, तथा पंजाब घराना। प्रत्येक घराने की वादन शैली पृथक–पृथक होती है, जिसके आधार पर यह सरलता से ज्ञात किया जा सकता है कि अमुक बन्दिश किस घराने की है, इसी प्रकार किसी तबला कलाकार की वादन शैली को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अमुक कलाकार किस घराने से सम्बन्धित है। तबला वाद्य के पंजाब घराने की वादन शैली पखावज से प्रभावित है, इसलिए उसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व माना जाता है। तबले के पंजाब घराने को एक विशिष्ट घराने के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने में कई महान तबला कलाकारों का अमूल्य योगदान रहा है– जैसे– उस्ताद कादिर बख्श, उस्ताद अल्ला रक्खा, श्री लक्ष्मण सिंह सीन इत्यादि। इन महान तबला गुरूओं ने अपने शिष्यों को तैयार किया, जो वर्तमान में तबला परम्परा को आगे ले जा रहे हैं जैसे– उस्ताद ज़ाकिर हुसैन, फ़ज़ल कुरैशी, पं0 योगेश समशी इत्यादि।

पंजाब घराने के सुप्रसिद्ध वर्तमान कलाकार तबले के जादूगर उस्ताद ज़ाकिर हुसैन तबला में क्रान्तिकारी कार्य रहे हैं। अपने तबले की कलाकारी से दुनिया में लोहा मनवाने वाले उस्ताद ज़ाकिर हुसैन का जन्म 9 मार्च सन् 1951 ई0 को मुम्बई में हुआ था। उस्ताद ज़ाकिर हुसैन सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद अल्ला रक्खा के बड़े सुपुत्र हैं। उस्ताद ज़ाकिर हुसैन ने अपने इंटरनेशनल व्यवसाय

(करियर) का आरम्भ बहुत ही कम आयु में प्रारम्भ कर दिया था। वर्तमान में देश–विदेश की यात्रा कर तबला क्षेत्र को और अधिक विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त तबला वादक उस्ताद ज़ाकिर हुसैन देश के करोड़ों लोगों के हृदय में समाये हुए हैं। अत्यधिक आकर्षक व्यक्तित्व के धनी उस्ताद ज़ाकिर हुसैन में ऐसे अनेकों गुण समाहित हैं जिससे वे कलाकारों के समूह में अलग पहचाने जाते हैं। उस्ताद ज़ाकिर हुसैन ने अपनी प्रतिभा, अद्वितीय कला कौशल, बुद्धिमत्ता, सृजनशीलता, संगीत की कठिन साधना द्वारा तबला वाद्य कला को उच्च शिखर तक पहुँचाया है तथा तबला साहित्य को समृद्ध भी किया है।

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। वैज्ञानिक परिवेश के अनुसार उस्ताद ज़ाकिर हुसैन द्वारा वैज्ञानिक तकनीकियों, उपकरणों इत्यादि के साथ तबला वाद्य का सामंजस्य स्थापित करते हुये नित्य नवीन प्रयोग किये जा रहे हैं इसीलिए वर्तमान में उस्ताद ज़ाकिर हुसैन अद्वितीय तबला कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत किया गया स्वतन्त्र तबला वादन श्रोताओं को अकस्मात ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है, तथा मन को आल्हादित कर कर–तल ध्वनि उत्पन्न करने हेतु विवश कर देती है। स्वतन्त्र तबला वादन में चमत्कारिता का अद्भुत प्रभाव आपके वादन शैली की प्रमुख विशेषता है। उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के वादन का बहुत बड़ा संग्रह दृश्य–श्रव्य रूप में इन्टरनेट पर उपलब्ध है। अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति प्राप्त उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के स्वतन्त्र तबला वादन प्रस्तुतीकरण का ढ़ग निराला होता है जों श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित करता है।

शोधकत्री तबला छात्रा है तथा उस्ताद ज़ाकिर हुसैन की स्वतन्त्र तबला वादन शैली के सन्दर्भ में और अधिक जानने के इच्छुक है। अतः उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के वर्तमान परिवेश में स्वतन्त्र तबला वादन शैली को जानने हेतु प्रस्तुत शोध–कार्य का चयन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः– शोधकत्री ने शोध प्रबन्धों, लेखों तथा इंटरनेट पर अपने शोध विषय का अध्ययन किया है, उनमें कुछ इस प्रकार है–

शोध प्रबन्धः–

- तबला–वादन के विकास में पंजाब घराने का महत्व एवं योगदानः जगमोहन शर्मा, महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय 1995.
- तबले का उद्‌गम विकास और वादन शैलियाँः योगमाया शुक्ल, दिल्ली विश्व विद्यालय 1984.
- पंजाब घराना एवं दिल्ली घराना की वादन शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन (तबला वादन के विशेष सन्दर्भ में) प्रियंका अरोड़ा, गुरू नानक डीम्ड यूनिवर्सिटि 2012.
- तबले की विस्तारशील बदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययनः पेशकार, कायदा और रेला के विशेष सन्दर्भ में : जमुना प्रसाद पटेल, इंदिरा कला संगीत विश्व विद्यालय 2009.
- भारतीय संगीत में पंजाब का योगदानः गीता पेंतल, दिल्ली विश्व विद्यालय 1985.

एम.फिल. लघु–शोधः–

- उस्ताद ज़ाकिर हुसैन द्वारा दृश्य–श्रव्य सामग्री में प्रस्तुत विस्तारशील बन्दिशों का अध्ययन (कायदे के विशिष्ट सन्दर्भ में): ज्योति, दयालब़ाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, 2015

एम.ए. लघु–शोधकार्यः–

- सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद अल्ला रक्खा का तबला–वादन क्षेत्र में योगदानः ज्योति, दयालब़ाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट 2014

पत्रिकाऐंः–

- संगीत कला बिहारः तबल्याचे जादुगार उत्साद श्री झाकिर हुसैन याना मानपत्र, अखिल भारतीय गान्धर्व मंडल प्रकाशन।

उपरोक्त शोध प्रबन्धों एवं पत्रिकाओं के अन्तर्गत उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के जीवन पक्ष से सम्बन्धित संक्षिप्त तथ्य मिलते हैं। उस्ताद ज़ाकिर हुसैन द्वारा बजाये गये कतिपय कायदों का प्रतिलेखन मिलता है, परन्तु उनकी वर्तमान परिवेश में वादन शैली के सन्दर्भ में विस्तृत जानकारी नहीं मिलती।

समस्या कथनः— वर्तमान परिवेश में सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद ज़ाकिर हुसैन की वादन शैली का विवेचनात्मक अध्ययन (स्वतन्त्र तबला वादन के विशेष सन्दर्भ में)

उद्देश्यः— प्रस्तुत शोधकार्य के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं—

- ✓ उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के जीवन परिचय का अध्ययन करना।
- ✓ उस्ताद ज़ाकिर हुसैन का घराना एवं शैली का अध्ययन करना।
- ✓ वर्तमान परिवेश में उस्ताद ज़ाकिर हुसैन की वादन शैली का अध्ययन करना।
- ✓ वर्तमान परिवेश में उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के तबला स्वतन्त्र वादन की प्रस्तुतीकरण से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना।

परिसीमांकनः— प्रस्तुत शोधकार्य की समय—सीमा को देखते हुए उस्ताद ज़ाकिर हुसैन की स्वतन्त्र तबला वादन शैली तक सीमित रहेगा।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्याः— 1. वादन शैली का अर्थ — किसी वाद्य को बजाने की शैली, विधि या स्टाइल को वादन शैली कहते हैं। वादन शैली के लिए लोक भाषा का शब्द 'बाज' अधिक प्रचलित है।

2. वादन शैली की व्याख्या — तबले के वादन शैली का सीधा सम्बन्ध तबले के बजाने की प्रक्रिया, वादन तरीका, तबले पर हाथ रखने का ढ़ग एवं अंगुलियों से तबले में प्रयुक्त होने वाले वर्णों के निकास से होता है, जिसमें उस वाद्य की वादन शैली में प्रयुक्त तकनीकियों का समावेश होता है।

अध्ययन स्त्रोतः— प्रस्तुत शोध कार्य विषय से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन, पुस्तकालयों, संग्रहालयों, विद्वजन से विचार—विमर्श व इन्टरनेट पर उपलब्ध दृश्य—श्रव्य रूप में उपलब्ध सामग्री के अवलोकन के आधार पर पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन विधिः— वैयक्तित्व अध्ययन विधि, अवलोकन विधि, विवेचनात्मक विधि, साक्षात्कार विधि, प्रश्नावली विधि इत्यादि।

अध्ययन की रूपरेखाः— शोध प्राप्त सामग्री को सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने हेतु सामग्री को निम्न अध्यायों में समायोजित किया जायेगा—

अध्ययन के सोपानः—

प्रथम अध्यायः— सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण।

द्वितीय अध्यायः— उस्ताद ज़ाकिर हुसैन का जीवन परिचय

- जन्म एवं पारिवारिक परिवेश
- शिक्षा
- व्यक्तित्व
- वैवाहिक जीवन
- गतिविधियाँ
- उपाधियाँ
- उपलब्धियाँ

तृतीय अध्यायः— उस्ताद ज़ाकिर हुसैन का घराना एवं शैली

- घराना अर्थ एवं व्याख्या
- परिभाषा
- शैली अर्थ एवं व्याख्या
- शिष्य परम्परा

चतुर्थ अध्यायः— वर्तमान परिवेश में उस्ताद ज़ाकिर हुसैन की वादन शैली

- बैठक

- मुख–मुद्रा (मुख का भाव पक्ष)
- हाथ का रख–रखाव
- वर्ण निकास
- सम, ताली, खाली बोलों का सौन्दर्य
- बन्दिश प्रस्तुतीकरण का सौन्दर्य
- तिहाईयों के प्रयोग का सौन्दर्य
- नादात्मक सौन्दर्य

पंचम अध्यायः– वर्तमान परिवेश में उस्माद ज़ाकिर हुसैन का तबला स्वतन्त्र वादन प्रस्तुतीकरण

- स्वतन्त्र वादन का अर्थ, परिभाषा, नियम–सिद्धान्त
- स्वतन्त्र तबला वादक रूप में उस्ताद ज़ाकिर हुसैन
- स्वतन्त्र वादन हेतु प्रयुक्त की गई तालें
- तबला स्वतन्त्र प्रस्तुतीकरण का क्रम
- वादन गत विशेषतायें
- बन्दिशों का चयन
- उस्ताद ज़ाकिर हुसैन की वादन शैली के सन्दर्भ में विभिन्न कलाकारों के विचार

षष्ठम अध्यायः– उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूचीः–

○ तबला विशारद – डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी।

○ तबले का उद्गम, विकास और वादन शैलियाँ – योगमाया शुक्ल।

○ तबले के घराने, वादन शैलियाँ एवं बंदिशें – डॉ0 सुदर्शन राम।

○ ताल–कोश – गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव।

○ ताल प्रबन्ध – पंडित छोटे लाल मिश्र।

○ पंजाब की संगीत परम्परा – गीता पैन्तल।

○ तबला पुराण – विजय शंकर मिश्र।

○ संगीत पत्रिका, 80 वर्षीय संगीत अंक, जनवरी 2015.